डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा.

उपन्यास IX Paper

प्रश्न: उपन्यास जनसाधारण के जीवन का एक महाकाव्य है। इस कथन की व्याख्या करते हुए इसके स्वरूप की विवेचना कीजिए।

अथवा

उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप और रचना-विधान पर विचार कीजिए।

उत्तर

गल्प एक बहुत पुरानी विधा है। संस्कृत साहित्य में बहुत पहले ही इसका विकास हो चुका था। संस्कृत साहित्य में भी उपन्यास शब्द का प्रयोग हुआ है किंतु हिन्दी का जो उपन्यास विधा है वह (novel) नॉवेल का समानार्थी है। 'नॉवेल' का अर्थ होता है नवीन। यह शब्द इटैलियन भाषा के नॉवेला शब्द से बना है। इसका अर्थ है - सूचना। इसी अर्थ के आधार पर पाश्चात्य विचारक क्लिफ्टे ने 'नॉवेल' की व्याख्या करते हुए लिखा है - 'नॉवेल' शब्द से एक नवीन प्रकार की कथात्मक-गद्यात्मक-रचना का बोध होता है जिसमें आधुनिकता और यथार्थ दोनों की प्रतिष्ठा पायी जाती है। यद्यपि उपन्यास 'फिक्शन' का समानार्थी है किंतु हमारे यहाँ का उपयुक्त पर्यायवाची 'नॉवेल' को स्वीकार किया गया है। इस दृष्टि से उपन्यास हिन्दी में एक आधुनिकतम विधा है।

उपन्यास की परिभाषा

फ्रांसीसी विद्वान एबेल शेवेले के अनुसार, "उपन्यास निश्चित आकार वाला एक गद्य आख्यान है।"

न्यू इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार - "बृहद आकार, गद्य आख्यान या वृत्तांत, जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों को कथानक में जब चित्रित किया जाता है, उसे उपन्यास कहते हैं।"

पाश्चात्य विचारकों के अलावे भारतीय चिंतकों ने भी उपन्यास की परिभाषा देने की कोशिश की है —

डॉ. श्यामसुंदर दास के अनुसार - "मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा को उपन्यास कहते हैं।"

प्रेमचंद का कथन है — "उपन्यास मानव चरित्र का चित्रण है। उनके अनुसार मानव चरित्र पर प्रकाश डालना

P.T.O

पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना मूल-तत्व है।"

बाबू गुलाब राय का मत है — "उपन्यास कार्य-कारण शृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचदगी के साथ जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक कल्पनाओं, घटनाओं द्वारा मानव-जीवन में सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि उपन्यास मानव जीवन [illegible] उसके रहस्यों के उद्घाटन तथा उसके उन्नयन के लिए जो विचार बुने जाते हैं, वह उपन्यास है।

उपन्यास का स्वरूप

यहाँ उपन्यास की जो परिभाषाएँ दी गयी हैं उनके विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उपन्यास जीवन का कल्पना-परक यथार्थ चित्रण है। उपन्यास में मनुष्य के अतिरिक्त अन्य पदार्थों का वर्णन होते हुए भी उसका मुख्य विषय मानव का जीवन ही है। इसलिए उपन्यास को मानव जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। यद्यपि उपन्यास में अंकित यथार्थ घटनाएँ कल्पना द्वारा नवीन रूप में ग्रहण की जाती हैं, पर वे जीवन से ही संबंधित होती हैं। यही कारण है कि घटनाएँ वास्तविक एवं स्वाभाविक जान पड़ती हैं। यहाँ उल्लेखनीय यह है कि किसी भी युग-विशेष की सांस्कृतिक झाँकी उस समय के उपन्यास साहित्य में सर्वांगीण रूप में उपलब्ध होती है। उपन्यासकार को युग-निर्माता एवं जीवन का व्याख्याता माना जाता है।

इसलिए उपन्यास का स्वरूप विवेचन करते हुए, उसका अन्य साहित्य के रूपों से संबंध करना आवश्यक माना जाता है। यद्यपि दोनों में कतिपय समानता होते हुए भी पर्याप्त विभिन्नताएँ हैं। यहाँ उपन्यास के [illegible] संबंध में यह बात लागू नहीं होती और दोनों में चरित्र-चित्रण संबंधी अंतर भी दिखलाई पड़ता है तथा 'महाकाव्य' में वस्तु के साथ महत् कार्य महत् उद्देश्य, महत् फल जुड़े होते हैं, किंतु उपन्यास के संदर्भ में इन त्रयीमुखी का कोई महत्व नहीं होता है।

एक पाश्चात्य विचारक ने उपन्यास को 'पॉकेट थियेटर' कहकर संबोधित किया है, किन्तु दोनों में इस साम्य के बावजूद विषमता है। यदि नाटक दृश्य-काव्य है

P.T.O

तो नाटक पाठ्य-काव्य, दोनों में कलागत भेद है। नाटककार स्थान-समय की रंगमंचीय निषेध की सीमाओं से बंधा रहता है और रंगमंचीय आवश्यकताओं एवं दर्शकों की ग्राह्य क्षमता के अनुकूल उसकी रचना का आकार सीमित होता है, पर उपन्यास का क्षेत्र बहुत बड़ा होता है, इसी कारण से उपन्यास की आकार सीमा पर कोई स्थूल प्रतिबंध नहीं होता है। पाश्चात्य विचारक हडसन ने स्पष्ट कहा है — "नाटक जितना वैयक्तिक नियंत्रण में रहता है, उपन्यास को उतनी स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

सामान्यत: उपन्यास और कहानी में तात्विक समानता होते हुए भी दोनों में अनेक असमानताएँ हैं। कहानी को न तो छोटा उपन्यास कहा जा सकता है तथा न उपन्यास को बड़ी कहानी की संज्ञा प्रदान की जा सकती है। डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है — "उपन्यास एक शाखा प्रशाखा वाला एक विशाल वृक्ष है जबकि कहानी एक सुकुमार लता है।" उपन्यास और कहानी में एक-सी अनुरूपता नहीं होती। कहानी एक क्षण की हो सकती है, एक पात्र की हो सकती है एवं वह किसी खास वातावरण का चित्र उपस्थित कर सकती है। किंतु उपन्यास के साथ ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि वह एक विशाल शाखाओं वाला वृक्ष है जिसमें कई शाखाएँ होती हैं। कहानी का क्षेत्र छोटा होने के कारण उसमें उपन्यास की तरह विविधता नहीं हो सकती। उसमें पात्रों का न तो विस्तृत विवरण होता है या जीवन की विस्तृत व्याख्या होती है और न ही चरित्र-चित्रण। उसका कैनवास बहुत छोटा होता, इसलिए उसमें जीवन के तमाम चित्र नहीं समा सकते। यही दोनों में तात्विक अंतर है। उपन्यास महासागर है तो कहानी छोटी नदी।

P.G. Semester II
IX Paper
'upnyas ka swaroop'